18. आजादी में जीवन

मैना- सुग्गा पिंजरे में
हों बंद, दुखी हो जाते,
सुख-सुविधा, मनचाहा भोजन
फिर भी चहक न पाते।

चिड़ियाघर में कैद शेर
हरदम दहाड़ गुर्राता,
वहाँ गुलामी का वह जीवन
उसको रास न आता।

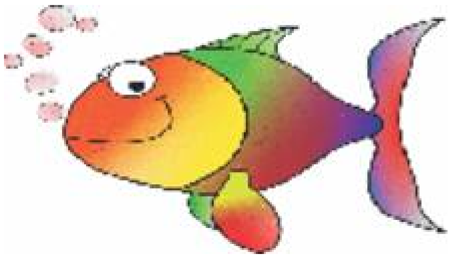

मछली जल में मचला करती
जल प्राणों से प्यारा,
जल से बाहर रहकर जीना
उसको नहीं गवारा।

मुसकाती कलियों को है
फूलों की डाली प्यारी,
अगर तोड़ लेता कोई
तो मुरझाती बेचारी।

सबको अपना घर प्यारा है
आजादी है प्यारी,
आजादी में जीवन है
जीवन की खुशियाँ सारी।

—भगवती प्रसाद द्विवेदी

शब्दार्थ

हरदम	–	हमेशा
मनचाहा	–	मन जैसा चाहे
रास न आना	–	अच्छा नहीं लगना।
गवारा	–	स्वीकार

अभ्यास

बातचीत के लिए

1. चिड़ियाघर में कौन-कौन से पशु-पक्षियों को रखा जाता है ?
2. चिड़ियाघर में पशु-पक्षियों के रहने एवं खाने-पीने की व्यवस्था कैसे की जाती है?
3. पालतू पशुओं को जंगल में एवं जंगली पशुओं को घर में रखा जाए तो क्या होगा?
4. जलीय जंतुओं को यदि स्थल पर रखा जाय तो उन्हें क्या-क्या कठिनाइयाँ आ सकती हैं?
5. हम किन-किन पक्षियों को पालते हैं और क्यों ?

आपकी समझ से

1. पत्येक पशु-पक्षी आजाद रहना चाहता है लेकिन इंसान कई पशु-पक्षियों को कैद करके रखते हैं? आपके अनुसार क्या यह उचित है?
2. आपको अपना घर क्यों प्यारा लगता है?
3. मनचाहा भोजन, कपड़े, खिलौने आदि न मिलने पर आप क्या करते हैं?
4. पशु-पक्षी स्वतंत्रतापूर्वक रह सकें इसके लिए हमें क्या करना चाहिए?

आज़ादी की बातें

1. आपके लिए आज़ादी के क्या-क्या मतलब हैं ? (✓) लगाइए -

- अपनी बात जी भरकर कहना। ☐
- किसी को कुछ भी कहना ☐
- छुट्टी का दिन । ☐
- लड्डू खाने का दिन । ☐
- मनपसंद कहानी पढ़ना । ☐

2. बताइए, आज़ादी का क्या मतलब होगा ?

- चिड़िया के लिए...
- शेर के लिए..
- मछली के लिए...
- आपकी बहन के लिए..
- आपके भाई के लिए...

3. आपने अपने आस-पास ऐसा ज़रूर देखा होगा -

- रंग-बिरंगी चिड़ियां को पिंजरे में कैद करके उन्हें बेचना।
- घरों में तोते एवं मछलियां को पालना ।

(क) क्या आपको यह सही लगता है ? क्यों ?

(ख) पशु-पक्षी कैद में रहते हुए कैसा महसूस करते होंगे ?

(ग) अगर आपको कोई कैद करके रखे तो आपको कैसा लगेगा ?

कविता में से

1. कलियाँ कब मुस्काती और कब मुरझा जाती हैं ?
2. तोता-मैना पिंजरे में मनचाहा भोजन मिलने के बाद भी खुश क्यों नहीं रह पाते ?
3. शेर चिड़ियाघर में क्यों नहीं रहना चाहता?
4. **कविता के दिए गए अंश के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प के आगे सही चिह्न (✓) लगाइए -**

मैना-सुग्गा पिंजरे में
हो बंद, दुखी हो जाते,
सुख-सुविधा, मनचाहा भोजन
फिर भी चहक न पाते ।
चिड़ियाघर में कैद शेर
हरदम दहाड़ गुर्राता,
वहाँ गुलामी का वह जीवन
उसको रास न आता ।

(क) चिड़ियाघर को गुलामी का जीवन कहा गया है, क्योंकि
- वहाँ काम करना पड़ता है । ☐
- वहाँ खाने को नहीं मिलता । ☐
- वहाँ अपनी मर्ज़ी से घूम-फिर नहीं सकते । ☐

(ख) चिड़ियाघर में कैद शेर क्या करता है ?
- पिंजरे को तोड़ता है । ☐
- दहाड़ते-गुर्राते हुए कैद से आज़ाद होना चाहता है । ☐
- सारा दिन परेशान करता है । ☐

(ग) मैना-तोता पिंजरे में दुखी हो जाते हैं, क्योंकि -
- वे आकाश में उड़ना चाहते हैं । ☐
- उन्हें पिंजरे में अच्छा भोजन नहीं मिलता । ☐
- वे पिंजरे में चहक नहीं सकते । ☐

(घ) प्राणियों को सबसे ज्यादा क्या अच्छा लगता है ?

- मनचाहा भोजन ☐
- आज़ादी ☐
- सुख-सुविधाएँ ☐

(ङ) कवि कहना चाहता है कि –

- चिड़ियाघर खराब जगह है । ☐
- पशु-पक्षियों को सुख से रखना चाहिए । ☐
- आज़ादी में खुशी होती है । ☐

5. दी गई पंक्तियों को पढ़ें एवं बताएँ कि वे पंक्तियाँ किनके लिए कही गई हैं –

(क) सुख-सुविधा मनचाहा भोजन फिर भी चहक न पाते।

(ख) वहाँ गुलामी का वह जीवन उसको रास न आता।

(ग) जल से बाहर रहकर जीना, उसको नहीं गवारा।

(घ) फूलों को डाली प्यारी।

6. नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं इनके लिए कविता में से उपयुक्त पंक्तियाँ छाँटकर लिखिए –

शीर्षक की बात

1. कविता के दो अन्य शीर्षक बताइए ।

   (क) ---------------- (ख) ----------------

2. यह भी बताइए कि आप ये शीर्षक क्यों चुने ?

भाषा के नियम

1. इनका मतलब समझाइए-

(क) रास न आना

(ख) गवारा न होना

(ग) चहक न पाना

2. नीचे दिए गए वाक्यों के वचन बदलकर उन्हें दुबारा लिखिए -

(क) तोता पिंजरे में कैद था ।

....

(ख) मछली जल में मचलती है ।

....

(ग) शेर हरदम गुर्राता-दहाड़ता है ।

....

(घ) फूल को मत तोड़ो ।

....

3. जीवन शब्द से कई नए शब्द बन सकते हैं, जैसे -

जीवनी, जैव, जैविक, जीवनदान इत्यादि ।

आप नीचे दिए गए शब्दों से नए शब्द बनाइए –

(क) दिन – --

(ख) धन – --

रंगों की दुनिया

कविता में जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा हो उसका एक चित्र बनाइए और उसमें रंग भरिए। आप चाहें तो अपनी एक छोटी-सी कविता भी लिख सकते हैं–

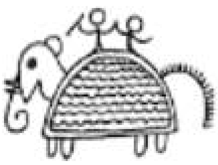

19. अँधेर नगरी

पात्र

महंत, शिष्य गोवर्धनदास, शिष्य नारायणदास, राजा, कुंजड़िन, हलवाई, फ़रियादी, कल्लू बनिया, कारीगर, चूने वाला, भिश्ती, कसाई, गड़ेरिया, कोतवाल, कुछ सिपाही

स्थान–शहर से बाहर सड़क

। महंतजी और दो चेले बातें कर रहे हैं ।

महंत : बच्चा नारायणदास! यह नगर तो दूर से बड़ा सुंदर दिखलाई पड़ता है। देख कुछ भिक्षा मिले तो बहुत अच्छा है।

नारायणदास : गुरुजी महाराज! नगर तो सचमुच बहुत ही सुंदर है। बहुत अच्छा है।

महंत : बच्चा गोवर्धनदास! तू पश्चिम की ओर जा और नारायणदास पूर्व की ओर जाएगा।

[गोवर्धनदास जाता है]

गोवर्धनदास : (कुंजड़िन से) क्यों, भाजी क्या भाव?

कुंजड़िन : बाबाजी! टके सेर।

गोवर्धनदास : सब भाजी टके सेर। वाह ! वाह ! बड़ा आनंद है। यहाँ सभी चीज़ें टके सेर। (हलवाई के पास जाकर) क्यों भाई हलवाई! मिठाई क्या भाव?

हलवाई : सब टके सेर।

गोवर्धनदास: वाह ! वाह ! बड़ा आनंद है। सब टके सेर। क्यों बच्चा! इस नगरी का नाम क्या है?

हलवाई : अँधेर नगरी।

गोवर्धनदास : और राजा का नाम क्या है?

हलवाई : चौपट राजा।

गोवर्धनदास : वाह ! वाह !

अँधेर नगरी चौपट राजा,
टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

हलवाई : तो बाबाजी! कुछ लेना हो तो बोलो?

गोवर्धनदास : बच्चा, भिक्षा मांगकर सात पैसे लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे।

[महंतजी और नारायणदास एक ओर से आते हैं और दूसरी ओर से गोवर्धनदास आता है]

महंत : बच्चा गोवर्धनदास! कह, क्या भिक्षा लाया? गठरी तो भारी मालूम पड़ती है।

गोवर्धनदास : गुरुजी महाराज! सात पैसे भिक्षा में मिले थे। उसी से साढ़े तीन सेर मिठाई मोल ली है।

महंत : बच्चा! नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सभी चीज़ें टके सेर मिलती हैं, तो मैंने इसकी बात का विश्वास नहीं किया। बच्चा यह कौन-सी नगरी है और इसका कौन-सा राजा है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा मिलता है?

गोवर्धनदास : अँधेर नगरी चौपट राजा,
टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

महंत : तो बच्चा! ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा बिकता है। मैं तो नगर में अब पल भर भी नहीं रहूँगा। देख, मेरी बात मान, नहीं तो पीछे पछताएगा। मैं तो जाता हूँ, पर इतना

कहे जाता हूँ कि कभी संकट पड़े तो याद करना।

[राजा और मंत्री यथास्थान बैठे हैं। पर्दे के पीछे 'दुहाई है' की आवाज़ आती है।]

राजा : कौन चिल्लाता है? उसे बुलाओ तो।

[दो सिपाही एक फ़रियादी को लाते हैं]

फ़रियादी : दुहाई महाराज, दुहाई !

राजा : बोलो, क्या हुआ?

फ़रियादी : महाराज! कल्लू बनिए की दीवार गिर पड़ी, सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गई। न्याय हो।

राजा : अच्छा, कल्लू बनिए को पकड़ लाओ।

[सिपाही दौड़कर बाहर से बनिए को पकड़ लाते हैं]

राजा : क्यों रे बनिए! इसकी बकरी क्यों दबकर मर गई ?

कल्लू : महाराज! मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगर ने ऐसी दीवार बनाई कि गिर पड़ी।

राजा : अच्छा, कल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ।

[कल्लू जाता है। लोग कारीगर को पकड़कर लाते हैं]

राजा : क्यों रे कारीगर! इसकी बकरी कैसे मर गई?

कारीगर : महाराज! चूने वाले ने चूना ऐसा खराब बनाया कि दीवार गिर पड़ी।

राजा : अच्छा, उस चूने वाले को बुलाओ।

[कारीगर निकाला जाता है। चूने वाला पकड़कर लाया जाता है]

राजा : क्यों रे चूने वाले! इसकी बकरी कैसे मर गई?

चूनेवाला : महाराज! भिश्ती ने चूने में पानी ज्यादा डाल दिया, इसी से चूना कमज़ोर हो गया।

राजा : तो भिश्ती को पकड़ो।

[भिश्ती लाया जाता है]

राजा : क्यों रे भिश्ती! इतना पानी क्यों डाल दिया कि दीवार गिर पड़ी और बकरी दब गई?

भिश्ती : महाराज! गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मसक इतनी बड़ी बना दी थी कि उसमें पानी ज्यादा आ गया।

राजा : अच्छा! कसाई को लाओ, भिश्ती को निकालो।

[लोग भिश्ती को निकालते हैं। कसाई को लाते हैं]

राजा : क्यों रे कसाई! तूने ऐसी मसक क्यों बनाई?

कसाई : महाराज! गड़ेरिए ने टके की ऐसी बड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची कि मसक बड़ी बन गई।

राजा : अच्छा! कसाई को निकालो, गड़ेरिए को लाओ।

[कसाई निकाला जाता है। गड़ेरिया लाया जाता है]

राजा : क्यों रे गड़ेरिए! ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेची?

गड़रिया : महाराज! उधर से कोतवाल की सवारी आई, उसकी भीड़-भाड़ के कारण मैंने छोटी-बड़ी भेड़ का ख्याल ही नहीं किया, मेरा कुछ कसूर नहीं।

राजा : इसको निकालो, कोतवाल को पकड़कर लाओ।

[कोतवाल को पकड़कर लाया जाता है]

राजा : क्यों रे कोतवाल! तूने सवारी इतनी धूम से क्यों निकाली कि गड़ेरिए ने घबराकर बड़ी भेड़ बेच दी?

कोतवाल : महाराज! मैंने कोई कसूर नहीं किया।

राजा : कुछ नहीं महाराज! ले जाओ, कोतवाल को अभी फाँसी दे दो।

[सभी कोतवाल को पकड़कर ले जाते हैं]

स्थान-जंगी

[गोवर्धनदास बैठा मिठाई खा रहा है]

गोवर्धनदास : गुरुजी ने हमको नाहक यहाँ रहने को मना किया था। माना कि देश बहुत बुरा है, पर अपना क्या?

[चार सिपाही चारों ओर से आकर उसको पकड़ लेते हैं]

पहला सिपाही : चल बे चल! मिठाई खाकर खूब मोटा हो गया है। आज मज़ा मिलेगा ।

गोवर्धनदास : (घबड़ाकर) हैं। यह आफ़त कहाँ से आई? अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मुझे पकड़ते हो?

दूसरा सिपाही : आप बड़े मोटे हैं, इसलिए फाँसी लगेगी।

गोवर्धनदास : मोटा होने से फाँसी ! यह कहाँ का न्याय है? अरे, फकीरों से मज़ाक नहीं किया जाता।

पहला सिपाही : जब सूली पर चढ़ जाओगे तब मालूम पड़ेगा कि फाँसी या मज़ाक । सीधी तरह चलते हो या घसीटकर ले चलें?

गोवर्धनदास : तब भी बात क्या है, कि एक फकीर आदमी को नाहक फाँसी देते हो?

पहला सिपाही : बात यह है कल कोतवाल को फाँसी का हुक्म हुआ था। जब फाँसी देने को उसे ले गए तो फाँसी का फंदा बड़ा निकला क्योंकि कोतवाल साहब दुबले हैं। हमलोगों ने महाराज से विनती की। इस पर हुक्म हुआ किसी मोटे आदमी को फाँसी दे दो, क्योंकि बकरी मरने के अपराध में किसी न किसी को सजा होना जरूरी है, नहीं तो न्याय नहीं होगा।

गोवर्धनदास : दुहाई परमेश्वर की! मैं नाहक मारा जाता हूँ। यह बड़ा ही अँधेर है। गुरुजी महाराज का कहा मैंने न माना, उसका फल मुझे

भोगना पड़ा। गुरुजी, तुम कहाँ हो? आओ, मेरे प्राण बचाओ! मैं बे-अपराध मारा जाता हूँ। गुरुजी!

[गोवर्धनदास चिल्लाता है, सिपाही उसे पकड़कर ले जाते हैं]

गोवर्धनदास : हाय बाप रे! मुझे बेकसूर ही फाँसी देते हैं। अरे भाइयो, कुछ तो धर्म का ख्याल करो। अरे मुझे छोड़ दो। हाय! हाय!

पहला सिपाही : अबे, चुप रह! राजा का हुक्म भला कहीं टल सकता है? यह तेरा आखिरी दम है, राम का नाम ले, बेकार क्यों शोर करता है?

गोवर्धनदास : हाय, मैंने गुरुजी का कहना न माना, उसी का यह फल है। गुरुजी कहाँ हो? बचाओ, गुरुजी! गुरुजी!!

महंत : अरे बच्चा गोवर्धनदास! तेरी यह क्या दशा है?

गोवर्धनदास : (गुरुजी को हाथ जोड़कर) गुरुजी, दीवार के नीचे बकरी दब गई, जिसके लिए मुझे फाँसी दी जा रही है। गुरुजी, बचाओ?

महंत : कोई चिंता नहीं गोवर्धनदास! सब समर्थ है। (भौंह चढ़ाकर सिपाहियों से) सुनो, मुझे शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो? तुम लोग जरा किनारे हो जाओ। देखो मेरा कहना न मानोगे तो तुम्हारा भला न होगा।

सिपाही : नहीं महाराज! हम लोग हट जाते हैं। आप बेशक उपदेश दीजिए। (सिपाही हट जाते हैं। गुरुजी चेले के कान में कुछ समझाते हैं उसके बाद गुरु और चेला दोनों फाँसी पर चढ़ने के लिए झगड़ने लगते हैं।)

गोवर्धनदास : तब तो गुरुजी, हम अभी फाँसी चढ़ेंगे।

महंत : नहीं बच्चा, हम बूढ़े हुए, हमको चढ़ने दे।

गोवर्धनदास : स्वर्ग जाने में बूढ़ा-जवान क्या? आप सिद्ध हैं। आपको गति-अगति से क्या? मैं फाँसी चढ़ूँगा।

[इसी प्रकार दोनों हुज्जत करते हैं। सिपाही हैरान होते हैं। राजा, मंत्री और कोतवाल आते हैं]

राजा : यह क्या गोल-माल है?

सिपाही : महाराज, चेला कहता है मैं फाँसी चढ़ूँगा, गुरु कहता है मैं चढ़ूँगा। कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है।

राजा : (गुरुजी से) बाबाजी बोलो। आप फाँसी क्यों चढ़ना चाहते हैं?

महंत : राजा, इस समय ऐसी शुभ घड़ी है कि जो मरेगा, सीधा स्वर्ग जाएगा।

मंत्री : तब तो हम ही फाँसी चढ़ेंगे।

गोवर्धनदास : नहीं, हम। हमको हुक्म है।

कोतवाल : हम लटकेंगे, हमारे सबब से तो दीवार गिरी।

राजा : चुप रहो सब लोग। राजा के जीते जी और कौन स्वर्ग जा सकता है? हमको फाँसी चढ़ाओ, जल्दी-जल्दी।

/ राजा को लोग फाँसी पर लटका देते हैं /

–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

शब्दार्थ

टका	–	ताँबे/चाँदी का पुराना सिक्का जो दो पैसे के बराबर होता था।
कसूर	–	दोष, गलती
नाहक	–	बिना कारण
विनती	–	निवेदन, प्रार्थना
हुज्जत	–	बहस, झगड़ा
सबब	–	कारण
मसक	–	चमड़े का बना एक थैला-सा जिसे कमर पर लादकर भिश्ती घरों में पानी पहुँचाता है।
भिश्ती	–	मसक द्वारा पानी ढोने वाला व्यक्ति
फरियादी	–	शिकायत करने वाला

अभ्यास

बातचीत के लिए

1. आपके पड़ोस में लगने वाले बाज़ार में क्या-क्या बिकता है?

2. आप कभी बाज़ार में खरीदारी करने गए हैं? यदि हाँ, तो क्या-क्या खरीदा और कितने रुपये में ?

3. घर पर आप अपनी कौन-कौन-सी शिकायत माँ से और कौन-कौन-सी शिकायत पिताजी से करते हैं?

पाठ में से

1. **एकांकी में जो घटनाएँ घटी उन पर (✓) लगाइए और जो नहीं घटी उनपर (X) लगाइए ।**

- महंत जी ने अँधेर नगरी छोड़ने के लिए कहा । ☐
- कल्लू किसान की दीवार गिर पड़ी थी । ☐
- कारीगर ने भिश्ती पर आरोप लगाया । ☐
- नगर में सारी चीज़ें टके सेर मिलती थीं । ☐
- सिपाहियों ने फाँसी लगाने के लिए महंत को पकड़ लिया । ☐
- महंत ने गोवर्धनदास को फाँसी से बचाया। ☐
- लोग राजा को फाँसी पर लटका देते हैं । ☐

2. **महंत ने नगरी को छोड़ने की बात की। क्योंकि -**

- नगरी सुंदर नहीं थी।
- नगरी में खाजा टके सेर मिलता था ।
- नगरी में सभी चीज़ें एक ही दाम पर मिलती थीं जो बताता है कि वहाँ कोई नियम नहीं था ।
- उन्हें मालूम था कि यहाँ सिपाही गलत आरोप में फँसा सकते हैं ।

3. कल्लू ने किसकी और क्या गलती बताई ?
4. फ़रियादी ने राजा से क्या फ़रियाद की ?
5. राजा ने कोतवाल को फाँसी की सज़ा क्यों सुनाई ?
6. राजा ने स्वयं फाँसी पर चढ़ने के लिए क्यों कहा ?

समझ की बात

1. अँधेर नगरी में सभी ने नुकसान का कारण दूसरे को ही क्यों बताया ?
2. नगर को अँधेर नगरी क्यों कहा गया है ?

अनुमान और कल्पना

1. राजा के फाँसी चढ़ने के बाद उस नगर में क्या हुआ होगा ?
2. अगर आप अँधेर नगरी के राजा होते तो किस प्रकार न्याय करते ?

टके सेर

1. आपके बाज़ार में ये चीज़ें किस दाम में मिलती है ? पता करके लिखिए -

- एक किलो आटा ------------
- एक किलो आलू ------------
- दो दर्जन केले ------------
- एक दर्जन पेंसिल ------------
- एक लीटर दूध ------------

हाट-बाज़ार

1. आपके घर के आस-पास लगने वाले बाज़ार में क्या-क्या बिकता है ? तालिका में लिखिए -

सामान	बिकने वाली चीज़ें
खाने-पीने का	----------------------------------
पहनने का	----------------------------------
ओढ़ने का	----------------------------------
नहाने-धोने का	----------------------------------
पढ़ने का	----------------------------------
लिखने का	----------------------------------

2. बाज़ार में आपने कई चीज़ों के विज्ञापन वाले पोस्टर देखे होंगे। विज्ञापन वाले पोस्टरों में क्या-क्या होता है?

आप 'लिट्टी-चोखा' के लिए एक विज्ञापन बनाइए।

भाषा के नियम

1. नीचे दिए गए शब्द के समान अर्थ वाले शब्द लिखिए-

हुक्म
दुबला
सजा
परमेश्वर
ज़रूरी

2. 'कसूर' के आगे 'बे' जोड़कर 'बेकसूर' शब्द बना है। 'बे' उपसर्ग है जो शब्द के पहले जुड़ता है। 'बे' उपसर्ग नए शब्द बनाइए-

(क) बे + ईमान -.............. (ग) -----+ ताज़ -..............
(ख) -----+ सहारा -.............. (घ) -----+ परवाह -..............

3. नीचे दिए गए शब्दों को पढ़िए और बोलने के अंतर को समझिए-

- दीवार - दी + वा + र
- स्वर्ग स् + व + र् + ग
- ट्रक - ट् + र + क
- प्रकांड - प् + र + कां + ड

अब नीचे दिए गए शब्दों को बोलकर पढ़िए-

गोवर्धन	बकरी	कारीगर	ड्रामा	वर्षा	कर्म
ट्रेन	प्रकाश	गजा	विनम्र	राष्ट्र	क्रम

4. नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए –

- यह उसका फल है ।
- आज यही फल मिले ।

क्या दोनों वाक्यों में 'फल' का मतलब एक ही है ? पहले वाक्य में 'फल' का मतलब है – नतीजा, परिणाम । दूसरे वाक्य में 'फल' का अर्थ खाने वाले फलों से है जैसे- केला, अमरूद आदि ।

अब आप नीचे दिए वाक्यों को पढ़िए और मोटे शब्दों के मतलब लिखिए -

(क)

- कजरी बोली, ''अब मुझे **सोना** है ।'' ------------------
- तुषार ने तिजोरी में सारा **सोना** रख दिया। ------------------

(ख)

- नदिया के **तीर** सैर को चलो। ------------------
- **तीर** निशाने पर लगा। ------------------

(ग)

- महंत ने **उत्तर** दिया। ------------------
- **उत्तर** की तरफ देखो। ------------------

5. भेड़-बकरी आदि पशुओं को चराने वाले को गड़ेरिया कहते हैं । मशक से पानी डालने वाले को भिश्ती कहते हैं । बताइए इन्हें क्या कहते हैं-

- दूर की दृष्टि रखने वाला ....
- जो पढ़ाता है ....
- जो गहने बनाता है ....
- अभिनय करने वाला ....
- अभिनय करने वाली ....

पढ़ने का मज़ा

नीचे एकांकी का एक अंश दिया गया है। साथ ही उसी घटना से मिलती-जुलती एक कविता की कुछ पंक्तियाँ भी दी गई है । दोनों को पढ़कर बताइए कि आपको किसे पढ़ने में ज़्यादा मज़ा आया और क्यों ?

एकांकी का अंश

(सिपाही हट जाता है । गुरुजी चेले के कान में कुछ समझाते हैं । उसके बाद गुरु और चेला दोनों फाँसी पर चढ़ने के लिए झगड़ने लगते हैं।)

गोवर्धनदासः तब तो गुरुजी! हम अभी फाँसी पर चढ़ेंगे।

महंतः नहीं बच्चा! हम बूढ़े हुए। हमको चढ़ने दे।

कविता की पंक्तियाँ

गुरुजी ने चेले को आकर बुलाया,
तुरत कान में मंत्र कुछ गुनगुनाया।

झगड़ने लगे फिर गुरु और चेला,
भया उनमें धक्का बड़ा रेल-पेला ।

गुरु ने कहा-फाँसी पर मैं चढ़ूँगा,
कहा चेले ने - फाँसी पर मैं मरूँगा ।

आपकी कलम से

'अँधेर नगरी' एकांकी में आपको जो घटना सबसे अच्छी लगी हो उसे कहानी के रूप में लिखिए।